

दूःख तो एक दूसरे की मदद करने का अवसर

एक माँ थी जिसकी बेटी जन्मना गंभीर विकलांग थी। उसने अपने दिल के अंतरतम को बताया ।

जब से माँ अपनी बेटी की गंभीर विकलांगता को जानने पर रोये जा रही थी, तब से आज तक पति-पत्नी और परिवार के एक-दूसरे का समर्थन करके आया। उसने चला गया मार्गक्रम पुनरावलोकन करके हास्य के साथ बताया।

“बेटी हमारा परिवार का सूरज है।”

उसने भावी जीवन की चिंता से ग्रस्त रहते हुए तो भी उसकी बेटी की विकलांगता का सामना किया और बहुत से लोगों की मदद मिलते हुए तकलीफ को पार कर आया। उसमें बड़ा सहिष्णुता है।

तेत्रीकयो में “दलखरई देने वरले भी कर्मसंबंद हैं और सुनरई देने वरले भी कर्मसंबंद है” ऐसल सलखररल गयर है।

यर तू एक सूक कल तररकल है कल आसपलस में घटलत वलषयर दूसरू कल बलत नहरू बलक अधलक यल कड अडने आड से संबंधलत है।

हडररे ललए अकलनक डड़े हुए दुःख तू सललफ दुःखडूरू सलतथल नहरू है। इसल अवसर डर एक दूसरे कल डदद करनल कलहलए। ऐसल आकरण आनंदडड डलवन डर डहुँकने के ललए एक सुरलग बनेगल।

## दूःख तो एक दूसरे की मदद करने का अवसर

एक माँ थी जिसकी बेटी जन्मना गंभीर विकलांग थी। उसने अपने दिल के अंतरतम को बताया ।

जब से माँ अपनी बेटी की गंभीर विकलांगता को जानने पर रोये जा रही थी, तब से आज तक पति-पत्नी और परिवार के एक-दूसरे का समर्थन करके आया। उसने चला गया मार्गक्रम पुनरावलोकन करके हास्य के साथ बताया।

“बेटी हमारा परिवार का सूरज है।”

उसने भावी जीवन की चिंता से ग्रस्त रहते हुए तो भी उसकी बेटी की विकलांगता का सामना किया और बहुत से लोगों की मदद मिलते हुए तकलीफ को पार कर आया। उसमें बड़ा सहिष्णुता है।

तेत्रीक्यो में “दिखाई देने वाले भी कर्मसंबंद हैं और सुनाई देने वाले भी कर्मसंबंद है” ऐसा सिखाया गया है।

यह तो एक सोच का तरीका है कि आसपास में घटित विषय दूसरों की बात नहीं बल्कि अधिक या कम अपने आप से संबंधित है।

हमारे लिए अचानक पड़े हुए दुःख तो सिर्फ दुःखपूर्ण स्थिति नहीं है। इसी अवसर पर एक दूसरे की मदद करनी चाहिए। ऐसा आचरण आनंदमय जीवन पर पहुँचने के लिए एक सुराग बनेगा।